International Journal of Applied Research 2021; 7(6): 409-412

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(6): 409-412
www.allresearchjournal.com
Received: 13-03-2021
Accepted: 14-05-2021

प्रियंका कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी-विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
प्रियंका कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी-विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

आखिरी सलाम: वेश्या जीवन की त्रासद अभिव्यक्ति

प्रियंका कुमारी

सारांश:
'आखिरी सलाम' में वेश्या जीवन के त्रासद यथार्थ को लेखिका ने कथा का आधार बनाया है। इस उपन्यास में यद्यपि अनेक वेश्याओं के जीवन प्रसंग को उद्घाटित किया गया है, परन्तु पीड़ा सबकी बराबर ही है। सभी लगभग प्रेम में धोखा खाकर यहाँ तक पहुँची है। उपन्यास स्पष्ट करता है कि वेश्यावृति के कई कारण हैं, जैसे गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी आदि। लेकिन इसका सबसे महत्त्वपूर्ण कारण है पुरुषवादी मानसिकता। किसी स्त्री को वेश्या बनाने में पुरुष की भूमिका कम नहीं। शायद ही कोई ऐसी स्त्री होगी जो पेट की आग बुझाने के लिए देह बेचती हो। वेश्यावृति स्त्री के लिए ऐसा दलदल है, जिसमें वह एकबार किसी कारण से धस जाय, तो जीवनभर धँसती चली जाती है।

मुख्य शब्द: गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी

प्रस्तावनाः

आखिरी सलाम' नामक उपन्यास मधु काँकरिया का दूसरा चर्चित उपन्यास है, जिसका प्रकाशन राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से 2000ई. में हुआ। यह उपन्यास मुख्यतः वेश्याओं के जीवन तथा वेश्यावृति की समस्या पर आधारित है। उपन्यास में लेखिका ने वेश्याओं की एक रहस्यमय संसार का सृजन किया है। लेखिका स्वयं कहती है- ''शताब्दियों को बोझ ढोती देह की मंदिरों और पुजारियों की यह वह दुनिया है, जो हर कमरे की पृथक्-पृथक् इतिहास, जहाँ हर रात देह ही नहीं उघड़ती है, बल्कि आत्माओं की भी चीर-फाड़ होता रहता है।"[1] कलकत्ता महानगर के विभिन्न लालबती इलाके जैसे सोनागाछी, बहुबाजार, कालीघाट, बैरकपुर, खिरिदपुर आदि गलियों में बसनेवाले जीवन के कुरूप तथा भंयकर नग्न रूप का चित्रण यह उपन्यास है। यहाँ संस्कृति मर्यादा, परंपराओं का कोई डर नहीं, बंधन नहीं है।

कलकत्ता के इन लालबत्ती इलाके में अठारह से चालीस-बयालीस साल की अनेक वारांगनाएँ रहती हैं, जिनमें बंगाली, नेपाली और आगरावाली वारांएगनाएँ सम्मिलित हैं। सस्ते तथा भड़कीले मेकअप में रास्ते किनारे खड़ी इन सभी को कुछ उच्चस्तर दिलाने के लिए लाईनवालियाँ भी कहा जाता है। शार्ट एवं लांग रेट पर ग्राहकों को उपलब्ध होनेवाली ये नारियाँ मानो हाड़-मांस की जीवंत देह न होकर पशु बाजार में रखा कोई गोश्त हो। उपन्यास का एक कथन इसी संदर्भ को उद्घाटित करता है, जिसमें लेखिका कहती है-''ईश्वर की मानव को अमूल्य भेंट प्रेम और नारी की सबसे मूल्यवान संपत्ति शील के खरीद फरोख्त के ये रास्ते।"[2]

इन्हीं रास्तें पर समाज के सभी कोनों से लोग अपनी जिंदगी में रस, वेरायटी और झूठे प्यार बदबूदार, चूना झड़ती दिवारों वाले, फर्श टूटे कमरे, जहाँ यह देह व्यापार चलता है। परिवार, समाज और सभी प्रकार की मर्यादाओं से कहीं ये लाईनवालियाँ अशिक्षित, अविकसित, अपरिपक्व और आत्मविहीन। मधु ने जिन सूक्ष्मताओं के साथ इनका वर्णन किया है, मानों उनके मन के भाव, शारीरिक पीड़ा, आत्मग्लानि किसी नई उम्मीद की राह देखती इन नारियों को उन्होंने बड़ी ही नजदीकी से देखा हो। उनके जीवन को महसूस किया हो और शायद इसी कारण एक महिला पत्रकार सुकीर्ति नामक पात्र का जन्म मधु ने किया हो, जो सोनागाछी स्थित अविनाश कविराज स्ट्रीट की गलियों में रहनेवाली वेश्याओं के लिए कार्य कर रही है। अपनी एक सहेली और उसके यहाँ काम करनेवाली बाई की सुनंदा नामक तेरह वषीर्य लड़की को वह ढूँढ़ रही है। वेश्याओं के धधकते यथार्थ को जानने की चाह सुकीर्ति के माध्यम से लेखिका में दिखती है।

लेखिका मधु काँकरिया ने सोनागाछी के चकलों का चित्रण इस उपन्यास में किया है। वेश्यावृत्ति छोड़ चुकी मीना का एक चकला, जिसमें नूरी, कृष्णा, रमा, जूली, नलिनी और चंपा इन छह वेश्याओं के इर्द-गिर्द घूमता है यह उपन्यास। जहाँ सुकीर्ति का हमेशा आना-जाना लगा रहता है। यहाँ की वेश्याएँ अपने निजी जीवन की कहानी का वास्तविक बयान इस शर्त पर करती है कि ''मैं आपकों सब कुछ समझा देती हूँ, बस आननि आमार नाम छोपबेन ना..... छवि तुलबने ना।"[3] इस की आधार पर रमा अपने राज का खुलासा करती है। माँ-बाप, भाई बहनों को रूपये भेजने वाली रमा किस कारखाने में काम करती है यह पता चल जाए तो घरवाले उसका मुँह तक न देखें। पैसा लेना तो दूर की बात। मध्यवर्गीयों की तरह ही इज्जत का डर इन लाईनवालियों को भी सताता है। जूली भी इस धंघे में नई होने के कारण अपने अहं को बचाए हैं। घृणित, कीड़े लगे दाँतवाले, बदबू मारते आदमी के लिए भी बिछा जाना पड़ा उसको और उसको उस पर लानत यह है कि उस जानवर ने भी उसे इस्तेमाल कर पीटा। जूली सोच-समझकर सिसकती रहती है तो दूसरी ओर नूरी है, जो नौकरी की आस में इन चकले में लाई गई थी। भोली-भोली सोलह-सत्रह साल की मासूम, चेहरे पर स्कूली लड़कियों-सा भोलापन, आँखों में झाँकती पवित्रता लिए नूरी दाने-दाने को तरसते अपने माँ-बाप, भाई-बहनों के लिए कुछ करने की चाह में यहाँ फँसी। वेश्या जीवन का यह भी एक विकृत्त रूप है कि हर वेश्या किसी और को वेश्या बनती देखकर ही अपने वेश्या जीवन के हलाहल को झेल जाती है। इतना ही नहीं नाबालिक लड़कियों को एक यहाँ खरीदा जाता है, जिन्हें 'छुकरी' कहा जाता है। कृष्णा को देखकर कोई भी उसे 'छुकरी' ही समझ ले। एक बालिका की माँ, इक्कीस की उम्र बेहद खूबसूरत कृष्णा हर महीने हजार रूपये अपने बच्ची को भेजती है। इन्हें लड़कियों के बीच सुकीर्ति वेश्या जीवन की गहराई तक पहुँचना चाहती है।

चकले की मालकिन मैडम मीना की कहानी भी इन लड़कियों से भिन्न नहीं है। बंगाल के तलहरी गाँव में चार बहनें और तीन भाईयों में सबसे बड़ी है- मीना। हालात और परिस्थिति की मारी दस-ग्यारह साल की फ्राँक पहनने की उम्र में तीन-तीन घर का चैका-बरतन करती। ये काम हाथ से जाने के बाद एक पाँच-छह साल की बालिका की देखभाल करने का काम करनेवाली मीना कलकत्ता भेज दी जाती है। बहन पुतुल जया और ननकू की याद में मीना तड़पती रहती है, किन्तु उसके मालिक ने उसे गाँव नहीं वापस भेजा। एक दिन इसी मालिक द्वारा उसपर अत्याचार हुआ। उसकी बर्बादी हर रात होती रहती और वह कुछ नहीं कर पाती। चोरी के आरोप में पुलिस को पकड़वा दूँगा की धमकी से नन्हीं-सी मीना डर जाती। एक दिन वह घर से भागने में सफल हो जाती है, तो दूसरे रेलवे कर्मचारी के हाथ का शिकार बनती है। वह भी उसे पूरे छह महीने तक भोगकर इन अंधेरी गलियों में बेच देता है। पंद्रह वर्ष की उम्र में ही वेश्या बनी मीना पूरी तरह निराश और अंधकार में डूबी वेश्यावृत्ति कबूल कर लेती है। अड़तीस वर्षीय मीना आज भी अतीत की स्मृतियों के कड़वे घूट नहीं भूल पाई। यहाँ उपन्यास लेखिका हमें सोचने ऐसा वेश्या-जीवन का चयन किया था।

उपन्यास में नलिनी भी एक ऐसा ही पात्र है। नलिनी छह भाई-बहन है। घर में खाने तक का इंतजाम नहीं है। एक बड़ी उम्र के मर्द के प्यार में पड़कर घर से भागकर कलकत्ता आयी। नलिनी के साथ विवाह का नाटक कर पति-पत्नी की तरह कुछ दिन रहने वाला वही आदमी बहुबाजार के चकले में उसे बेच देता है। नलिनी की तड़प इस कथन में देखा जा सकता है, जिसमें वह कहती है- ''आज भी जब-जब दिन के पहले ग्राहक के पास जाती हूँ तो अपने उस पहले मर्द के नाम पर एक बार थूक अवश्य देती हूँ।"[4]

उपन्यास के सभी पात्र रमा, नलिनी, मीना, चंपा, नूरी, कृष्णा सभी की कहानियाँ एक जैसी, दुःख एक जैसे, भाषा एक जैसी। इनकी कहानियों के माध्यम से मधु काँकरिया इनके उत्थान के लिए प्रयत्न करना चाहती है। सुकीर्ति अपने स्वत्व,

ऊँचाईयों और आत्मगौरव से वंचित इन नारियों में जीवन की लौ और आत्मगौरव भरना चाहती है।

मदनलाल एंड सुरेका' नामक ब्रोकरशिप फार्म में नौकरी करनेवाली सुकीर्ति एक तरफ देह मार्केट का स्टॉक एक्सचेंज तो दूसरी तरफ शेयर बाजार का देह बाजार और शेयर बाजार में उलझी सुकीर्ति अपने अनुभवों को बाँटने के लिए किसी की आवश्यकता महसूस करती है। विवाह में धोखा खाई सुर्कीति को एक भरोसेमंद नाम मेघेन याद आता है। विश्वविद्यालयों जीवन का उसका एक सच्चा साथी एक अच्छा दोस्त मेघेन के मन में सुर्कीति के लिए पे्रम ही प्रेम था, जिसे उसने ठुकरा दिया था। आज बीस वर्ष बाद दोनों पुन: मिलते हैं। एक बच्चा और एक बच्ची का पिता मेघेन सुकीर्ति को समझ नहीं पाता। दोनों में सोनागाछी, बहुबाजार, कालीघाट, और खिरिदपुर आदि लालबत्ती इलाकों का जिक्र होता है। अपने मित्र के साथ वह इन नारियों का सुख-दुःख बाँटना चाहती है। आज के युग में भी इन वेश्याओं के पास जानेवाली क्षणिक दर्द-पीड़ा से पीड़ित होते हैं। सुर्कीति की पीड़ा उनके कथन में इस तरह व्यक्त हुआ है- ''सिर्फ गोश्त, ठीक जानवर की तरह और यह भी सही है कि वे इस स्तर पर जानवर होकर ही जीते हैं, क्योंकि आदमी और जानवर में एक ही अंतर होता है कि मैने कैन अवाइड इट बट एनिमल कांट।"[5]

लगभग 50-60 साल पूर्व इन वेश्याओं की महफिलों में केवल वासना ही नहीं तो उच्च कोटि की कलाएँ भी होती थी। शेरो-शायरी, दोहे, कविता, मुहावरों तथा कहावतों का अक्षय कोष इनके पास होता था। इनकी संभाषण कला हाजिरजबावी, रसिक मिजाजी एवं नृत्य, संगीत आदि का मजा लूटते रईस, शौकीन एवं सुसंस्कृत व्यक्ति तक आते थे। वह भी इन गलियों में खुलेआम, बिना अपराधबोध के जाया करते थे, परंतु आज परिस्थिति पूर्णतः बदल कर देह तक आ पहुँची है।

मधु काँकरिया ने वेश्या बनी स्त्रियों में दुःख, आत्मग्लानि के साथ-साथ समर्थता भी वर्णित की है। ये वेश्याएँ होकर भी अपने आप में आत्मा का सौन्दर्य सहेजे हुए हैं। ऐसी ही एक वेश्या नहीं तीर्थमयी नारी नजर आती है। वह संपूर्णतः माँ नजर आती है। इंद्राणी दी संलाप संस्था के माध्यम से वेश्यओं के लिए काम करती है। नेशनल स्कॉलर इन्द्राणी जी अपने डाक्टरेट के अध्ययन को छोड़ पन्द्रह वर्षों से इन्हीं वेश्याओं के बीच इन्हीं के लिए काम कर रही है। उसका नेटवर्क तमाम वेश्याओं नाबालिक लड़कियों की सहायता के लिए फैल हुआ है। समाज इन वेश्याओं को इनके बच्चों को नहीं अपनाता, परंतु इतना सोचता नहीं कि ये ऊपज किसकी है? इन्हीं बच्चों को जीवन प्रदान करने का कार्य इन्द्राणी जी कर रही है।

संलाप' से जुड़ी चंद्रिका सोनागाछी की ही एक और वेश्या है- जो इंद्राणी जी के कार्य में मदद करती है। चंद्रिका के कारण ही आएशा और अफसाना नामक दो लड़कियाँ जिन्हें उनकी खाला ही इन गलियों में बेच गयी थी, उनके माँ-बाप तक पहुँचायी जाती है। इन बदनाम गलियों में भी मानवता का साक्षात्कार होता है।

रेड लाईट' क्षेत्र का एक और पात्र है- पिंकी। वह पूरी तरह अशिक्षित तीस वर्षीय खानदानी वेश्या थी। इसी माहौल में आँखें खोली थी, पिंकी ने जिसके बाप का भी अता-पता नहीं था चैदह वर्ष की अवस्था में ही धोखा एवं क्रूरतापूर्वक वेश्या बना दी गई। माया भी कालीकट के इसी इलाके की रहने वाली पात्र है। किसी के दामन से बँधने की दुर्दम्य ललक ने माया देवनार और पिंकी दोनों को कुछ वर्षों तक अपने-अपने बाबू के साथ बांधे रखा। उनके बच्चे की माँ भी वे बनीं किन्तु कुछ सालों में ही फिर ये बाबू उन्हें छोड़ अपने घर चले जाते हैं। फिर जीवन से हारी ये वेश्याएँ नए 'शिव' की तलाश में अपने जीवन के सत्य, शिव, और सुंदरम को सवाँरने निकल पड़ती है। सोनागाछी की पिंकी, बहुबाजार की गायत्री और कालीघट की माया अपनी पूरी कुरूपता एवं भद्देपन के साथ नजरों के समक्ष धूम जाती है। इन सबके माध्यम से लेखिका वेश्या का दर्दनाक जीवन पाठकों के समक्ष रखती है।

लेखिका स्पष्ट करती है कि वेश्यावृत्ति हमारे देश की पुरानी समस्या है। यह किसी न किसी रूप में हमारे समाज में हमेशा रही है। कभी देवदासी, सर्वभोग्य, रूपजीवा, तो कभी नृत्यांगना, गणिका, नगरवधू तो कभी तबायफ, वारंगना, वेश्या तथा कॉलगर्ल इसी के विविध रूप हैं। समाज में विलासवृत्ति का सीधा संबंध वेश्यावृत्ति से है। यहाँ उपन्यास लेखिका ने विषकन्या, आम्रपाली, वैशाली की नगरबधू इनके उदाहरण के माध्यम से सदियों से चलते आए स्त्रीत्व का अपमान ही उजागर किया है।- ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' का जाप करनेवाली यह संस्कृति स्त्रियों से कभी तमीज और सभ्यता से पेश नहीं आई। उन्हें विवश किया कि वे अपने रूप और यौवन का जाम पिलाकर पुरूषों को प्राणवान, दृप्त और जीवंत रखे, जिससे वे स्वयं नित्य प्रति उर्जावान और गतिशील हो स्त्रियों को गतिहीन करते रहें।"[6] यहाँ तक कि सुर्कीति का पत्रकार मित्र विजय भी कामग्नि की दृप्ति के लिए दो बार वेश्याओं के पास गया था। सुर्कीति के विचार सुनकर पहली बार अपराधबोध ओर पश्चाताप उसमें जगा था। उसने न सिर्फ स्वयं को गिराया, बल्कि एक

स्त्री को भी गिराने में अपनी और से एक धक्का दिया। विजय के माध्यम से लेखिका ने सर्वसाधारण पुरूष जो समाज में इज्जतदार जिंदगी जीते हुए भी कभी न कभी इन गलियों में जाते हैं। इसका जीवंत उदाहरण दिया है। मेघेन जो सुर्कीति के लिए जीवनभर तड़पता रहा और विजय, जिसके लिए सुर्कीति के मन में प्यार के भाव जागे। फिर भी वह गृहस्थी की तृप्त और सुरक्षित जिंदगी ना मिलने में ही अपनी सार्थकता मानती है, ''क्योंकि तृप्ति आदमी की भीतरी चिनगारी को मशाल नहीं बनने देती, उसकी उड़ान और उठान को वापस लौटा देती है।"[7] इसी कारण अपनी पत्रकारिता और उसी के बहाने अपने जीवन की खोज जारी रखनेवाली सुर्कीति के माध्यम से लेखिका ने शायद स्वयं अस्तित्व को ही उजागर किया है।

संलाप' से जुड़ा एक और पात्र है- द्वारिका सिंह, जो औरतों को रंडी बनाने में सारी जिंदगी लगा दी। आज वही दिन-रात वेश्याओं के लिए कार्यरत है। श्रावणी वेश्या भी संलाप के माध्यम से इस भले कार्य से संलग्न है, परंतु दारू में जहर मिलाकर उसे मार दिया जाता है। ऐसी दुनिया, जिसमें फँसी नारी कभी बाहर नहीं निकल सकती। ताउम्र उसे इसी दुनिया की जिंदगी को झेलते हुए गुजारनी पड़ती है। इनका अंत भी अनेक गुप्तरोगों, बीमारियों से ही होता है।

एच.आई.वी पॉजिटिव माया ग्यारह-बारह साल की कच्ची उम्र वाली किसलय बालिकाओं का पानी के टब में बिठा-बिठाकर समय से पूर्व ही अप्राकृतिक तरीके से संभोग के लायक बनाने वाली माया की चैदह वर्षीय पुत्री विशाखा को उसकी अनुपस्थिति में वेश्या बना दिया जाता है। पुत्री की इज्जत लुटती देख वह जीवन की तपस्या ही भंग होती दिखती है उसे। कितनों को वेश्या बना डाला तो खुद की पुत्री कैसे बचती। रेशमी भी एच.आई.बी. पॉजीटिव है, परंतु अपना इलाज नहीं करना चाहती, बल्कि विनाश की इस सौगात को उस व्यक्ति के लिए संभालकर रखना चाहती है, जिसने उसे तेरह वर्ष की अवस्था में रंडी बनाया। जब तक वह नहीं मिलता संपूर्ण पुरूष जाति से वह बदला लेना चाहती है। इन गलियों मे आनेवाली सब पुरूषों को यह बीमारी देना चाहती है। पिंकी भी क्लिनिक में गर्भपात कर निरंतर बहते रक्तस्राव के कारण दर्दनाक मौत की शिकार हो जाती है। पिंकी की लड़की मलका भी वेश्या बन जाती है। इसी तरह हर वेश्या का जीवन इसी प्रकार त्रासद होता है।

सुर्कीति अपनी जिंदगी में आए पुरूषों के बारे में सोचती है। कैसा दुर्भाग्य कि पहले मेघेन फिर पति और अब विजय पुरूषों से संबंधित कोई भी भाव पूर्णता तक नहीं पहुँच पाते। विजय को उसकी कमियों के साथ, देहात में उसकी पत्नी होते हुए सुर्कीति अपनाए या ना अपनाए का निर्णय नहीं कर पाती। इसी उड़ेलबुन में वह सुनंदा की तलाश में आगे बढ़ती है और उपन्यास का अंत हो जाता है। यह उपन्यास केवल एक विधा न होकर वेश्या और उनके त्रासद जीवन का दस्तावेज भी है।

संदर्भ सूची:

1. सलाम आखिरी: मधु काँकरिया, पृ. 13.
2. उपरोक्त, पृ. – 14.
3. उपरोक्त, पृ. – 25.
4. मधु काँकरिया का रचना संसार-डॉ. उषा कीर्ति राणावत, पृ. – 40.
5. सलाम आखिरी-मधु काँकरिया, पृ. – 59.
6. उपरोक्त, पृ. – 127.
7. उपरोक्त, पृ. – 142.